शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

भारत–चीन सम्बन्ध : डोकलाम विवाद के सन्दर्भ में

डॉ0 नीलिमा सिंह

एसो0 प्रोफे0, राजनीति विज्ञान विभाग, राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय, (संघटक इलाहाबाद विश्वविद्यालय), इलाहाबाद

सारांश

भारत व चीन एशिया के बड़े तथा पड़ोसी राज्य हैं। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक व व्यापारिक सम्बन्ध प्राचीन काल से रहे हैं परन्तु दोनों के बीच निरन्तर सीमा विवाद भ रहे हैं। भारत व चीन के बीच सम्बन्धों का उतार चढ़ाव रहा है और इसी क्रम में जून में उत्पन्न डोकलाम विवाद था। जिसमें दोनों देषों के मध्य सम्बन्धों को तनाव की चरम् सीमा पर पहुँचा दिया था और 72 दिनों के बाद उक्त विवाद का कूटनीतिक समाधान हो गया और दोनों देषों की सेनायें विवादित क्षेत्र से पीछे आने लगीं। प्रस्तुत शोध पत्र में डोकलाम विवाद के विविध पहलू पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है जैसे डोकलाम विवाद है क्या, दोनों देशों ने किस तरह अपनी रणनीति द्वारा उक्त विवाद को सुलझाने का प्रयास किया। उक्त विवाद के कूटनीतिक समाधान के निहित कारण क्या थे और इसी सन्दर्भ में भारत चीन सम्बन्धों को विष्लेशित करने का प्रयास किया गया है।

महत्वपूर्ण शब्द *– डोकलाम, कूटनीति, युद्ध, समाधान, सेना*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 नीलिमा सिंह,

''भारत–चीन सम्बन्ध : डोकलाम विवाद के सन्दर्भ में''

शोध मंथन,

सितम्बर 2017,

पेज सं0 157–163

http://anubooks.com/?page_id=581

Artcile No.20 (SM 460)

डॉ0 नीलिमा सिंह

भारत और चीन पड़ोसी राज्य हैं तथा दोनों ही एशिया के दो बड़े राष्ट्र हैं। जनसंख्या व भौगोलिक दृष्टि से भी दोनों राष्ट्र विश्व के बड़े राष्ट्रों में शामिल हैं। भारत और चीन में प्राचीन समय से व्यापारिक व सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं। भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ और चीन में 1949 में साम्यवादी क्रान्ति हुई। भारत में जहाँ लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना हुई वहीं चीन में साम्यवादी गणराज्य की। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री तथा भारतीय विदेश नीति के प्रधान निर्माता पंडित जवाहरलाल नेहरु चीन के प्रति गहरी सहानुभूति रखते थे और चीन के साथ मैत्री को असंलग्नता की नीति की आधारशिला मानते थे। परन्तु भारत व चीन की विचारधारा एवं विविध संस्थाओं में भिन्नता है। भारत की विदेश नीति शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की एवं पंचशील के सिद्धान्तों पर आधारित है और साम्राज्यवादी या विस्तारवादी नीति को अस्वीकृत करती है जबकि चीन साम्यवादी विचारधारा का प्रबल समर्थक होने के कारण आक्रामक, साम्राज्यवादी और विस्तारवादी नीति का समर्थन करता है। उसकी इच्छा एशिया में एकाधिकार स्थापित करने की है। विगत कुछ वर्षों में भारत की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ती प्रतिष्ठा और दक्षिण एशिया में उसकी बढ़ती शक्ति के कारण चीन भारत को ईर्ष्या व वैमनस्य की दृष्टि से देखते हुए अपना प्रतिद्वन्दी मानता है और इसीलिए भारत के साथ समय–समय पर उसकी प्रतिद्वन्दिता सामने आती रहती है और उसी का एक उदाहरण भारत चीन के मध्य उपजा डोकलाम विवाद है। डोकलाम विवाद से दोनों देशों के बीच उत्पन्न तनाव 29 अगस्त, 2017 को भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता के वक्तव्य से शिथिल हुआ कि डोकलाम से भारत व चीन दोनों देशों की सेनाएँ वापस जाने के लिए तैयार हैं।

269 वर्ग किमी में फैला डोकलाम पठार चुंबी घाटी में स्थित है, जिसका काफी हिस्सा भूटान में है। इसकी कई चोटियाँ ऐसी हैं जो देष को पूर्वोत्तर से जोड़ने वाले चिकेंस नेक (सिलीगुड़ी गलियारा) से ऊपर हैं। इन चोटियों पर चीन के कब्जे की सूरत में युद्ध की स्थिति में चीन को बढ़त मिल जाती। इस इलाके में भूटान का भू–भाग चीन और भारत के बीच दूरी को बढ़ाता है। इसमें सबसे अहम् चुंबी घाटी है। 16 जून, 2017 को भारत के पड़ोसी भूटान ने आपात संदेष भेजा कि चीन की सेना बुलडोजर एवं अन्य निर्माण सामग्री के साथ डोकलाम पठार में सीमा के पास सड़क बना रही है। भारत के विरोध पर दोनों देशों के सैनिकों में झड़प हुई। चीन ने भारतीय सीमा में घुसकर दो बंकर नष्ट कर दिए। भारत का विरोध दर्ज कराने पर चीन ने सड़क निर्माण तो रोक दिया लेकिन सीमा से सेना नहीं हटाई। भूटान की सूचना पर भारत द्वारा चीन से आपत्ति दर्ज करने के पीछे कारण यह था कि भारत व भूटान के मध्य विशेष सम्बन्ध हैं और 1949 की संधि के अनुसार यह विदेशी मामले में भारत सरकार की सलाह से निर्देशित होगा। 1949 में हस्ताक्षर की गयी संधि और फिर 2007 में दोहराई गई संधि के अनुसार भूटान के भू–भाग के मामलों को देखना भी भारत की जिम्मेदारी है। ऐसे में यदि चीन, भूटान के किसी हिस्से पर दावा ठोकता है या उसकी संप्रभुता में दखल देता है तो भारत के लिए भी विरोध करना जरूरी है।[1]

भारत व चीन दोनों पक्षों द्वारा डोकलाम से सेनाएँ वापस करने की सहमति के बाद डोकलाम का कूटनीतिक समाधान हो गया। 72 दिन तक चले इस विवाद में चीन अपनी चिर–परिचित शैली से भारत पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाता रहा और भारत चीनी अपेक्षाओं के विपरीत डोकलाम में लगातार डटे रहते हुए तथा अनावश्यक बयानबाजी से दूर रहते हुए शांतिपूर्ण ढंग से कूटनीतिक रूप से गतिरोध को सुलझाने का प्रयास करता रहा। चीनी मीडिया और अधिकारियों ने अपने भड़काऊ बयानों द्वारा भारत को उकसाने का असफल प्रयास किया। 'भारत 1962 के युद्ध से सबक ले' जिसके प्रत्युत्तर में श्री अरुण जेटली ने कहा कि हमें सिखाने की जरूरत नहीं और अब भारत 1962 वाला भारत नहीं है। चीनी समाचार पत्र ने प्रकाशित किया कि यदि भारतीय सेना नहीं हटी तो दो हफ्ते में छोटा सैन्य ऑपरेशन संभव है।[2] 12 अगस्त 2017 को डोकलाम विवाद सुलझाने के लिए भारत और चीन के सैन्य अधिकारियों के बीच हुई बैठक असफल रही परन्तु इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय यह रहा कि चीन आखिकार वार्ता हेतु तैयार हुआ जबकि चीन समाधान के नाम पर इस विवादित क्षेत्र में सड़क निर्माण का काम रोके बगैर किसी सुलह समझौते पर पहुँचना चाह रहा था जबकि भारत की आपत्ति का मूल आधार ही विवादित क्षेत्र में चीन की ओर से सड़क बनाया जाना था तब फिर इसका औचित्य ही नहीं बनता कि समझौते के नाम पर उसे यह काम करने दिया जाए। चीन सैन्य अधिकारियों की बैठक से पूर्व इस पर जोर दे रहा था कि डोकलाम से भारतीय सैनिकों की वापसी बिना कोई बात नहीं होगी।

डोकलाम विवाद में चीन ने शुरू से ही अड़ियल एवं आक्रामक रुख अपनाया और जब इससे बात नहीं बनी तो उसने करीब–करीब हर दिन धमकियाँ देने का सिलसिला शुरू किया। चीनी मीडिया के साथ–साथ चीन के विदेश मंत्रालय ने जिस तरह अशिष्ट भाषा का प्रयोग करने के साथ झूठ का सहारा लिया उससे भारत सहित विश्व के अन्य देशों को भी उसके असली चेहरे को देखने में आसानी हुई। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर डोकलाम विवाद पर भारत के धैर्य एवं संयत स्वर में अपनी बात रखने का व्यापक प्रभाव पड़ा और चीन द्वारा फैलाये जा रहे अनेक दावे निराधार साबित हुए। पहले वह यह नहीं मान रहा था कि डोकलाम को लेकर उसका भूटान से कोई विवाद है। बाद में उसने यह माना, लेकिन एक और झूठ उछाल दिया कि भूटान ने इस क्षेत्र को उसका हिस्सा मान लिया है। भूटान ने तत्काल ही इसका खण्डन किया।[3] भारत पर दबाव डालने के लिए चीन ने सीमावर्ती क्षेत्रों में रक्तदान शिविर आयोजित करने का खूब प्रचार–प्रसार किया ताकि यह सन्देश जाये कि वह युद्ध के लिए पूर्ण तैयारी कर रहा है और दूसरी ओर यह झूठ फैलाया कि डोकलाम में भारत ने अपने सैनिक कम कर लिये हैं अथवा सिक्किम के सीमावर्ती क्षेत्र में गाँव खाली कराने शुरू कर दिये हैं। तिब्बत मसले पर मैकमोहन सीमा रेखा को नकारने वाले चीन ने जिस तरह डोकलाम पर 1890 में ब्रिटेन से हुई संधि का हवाला दिया उससे इसकी पुष्टि हुई कि अन्तर्राष्ट्रीय संधियों पर वह मनमाना रवैया अपनाता है। वह 1890 की सन्धि का उल्लेख तो कर रहा है, लेकिन 2012 के समझौते से मुँह मोड़ रहा है। विष्व के सम्मुख पहले ही उदाहरण है कि अन्य मामलों में अन्तर्राष्ट्रीय नियमों की दुहाई देने वाला चीन दक्षिण चीन सागर मामले में

किसी नियम कानून का पालने करने को तैयार नहीं और उसने अपने ही आचरण से अपनी विश्वसनीयता गँवाने का काम किया।[4]

डोकलाम विवाद पर निरन्तर आक्रामक और अड़ियल रुख प्रकट करने वाला चीन आखिर कूटनीतिक मार्ग से समाधान हेतु तैयार क्यों हुआ उसके कुछ कारण हैं। युद्ध की धमकी देने वाला चीन कूटनीतिक समाधान हेतु तैयार हुआ क्योंकि उसके लिए युद्ध की राह आसान नहीं थी[5] :–

1. पाकिस्तान, उत्तर कोरिया के अतिरिक्त कोई भी देश चीन के साथ खड़ा नहीं दिख रहा था। भारत व चीन के पड़ोसी नेपाल ने इस मामले में तटस्थ रहने की नीति अपनायी परन्तु पाँच दिवसीय भारत की यात्रा पर आये नेपाली प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा ने भारत में स्पष्ट घोषणा कर दी कि वह अपनी जमीन का प्रयोग किसी भी तरह से भारत विरोधी गतिविधियों के लिए नहीं करने देंगे। जापान ने तो डोकलाम मामले को लेकर भारत को स्पष्ट समर्थन की घोशणा ही कर दी थी।
2. रणनीतिकारों के मुताबिक अगर चीन हमले का फैसला करता तो उसे हर भारतीय सैनिक के लिए कम से कम नौ सैनिक लगाने होते। पारंपरिक युद्ध नियमों के अनुसार हमलावर सेना को दुश्मन के मुकाबले नौ से बारह गुना अधिक संसाधन का इस्तेमाल करना होता है। चीन के पास संसाधन की कमी तो नहीं है लेकिन इसकी तैयारी में उसे लम्बा वक्त लगता और जब तक वह सौ फीसदी जीत को लेकर आश्वस्त नहीं होता आक्रमण नहीं करता।
3. डोकलाम ट्राई जंक्शन पर चीनी सेना के जमावड़े को भारतीय सेना ने तीन तरफ से घेर रक्खा था। तीनों दिशाओं में भारतीय सेना चीनी सेना के मुकाबले ऊँचाई पर थी। सीमा पर भारतीय सेना की रक्षात्मक तैयारी से भारत को सामरिक बढ़त हासिल थी।
4. चीनी सेना ने वियतनाम युद्ध के बाद किसी युद्ध में भाग नहीं लिया है जबकि भारतीय सेना सदैव पाकिस्तानी सीमा पर अघोषित युद्ध से संघर्शरत ही रहती है। विशेषकर हिमालयी सरहदों में चीन की इतनी काबिलियत नहीं है वह भारत का मुकाबला कर सके।[6]
5. भारत की स्थिति हिंद महासागर में काफी मजबूत है। भारतीय नौ सेना बड़ी आसानी से यूरोप, मध्यपूर्व और अफ्रीका के साथ चीन के रास्ते की नाकेबन्दी कर सकती है। चीन 87 प्रतिशत कच्चा माल इसी रास्ते से आयात करता है।

चीन में 3–5 सितम्बर, 2017 को होने वाला ब्रिक्स सम्मेलन भी डोकलाम विवाद के कूटनीतिक समाधान के लिए उत्तरदायी है। भारत और चीन दोनों देशों पर इस विवाद को निपटाने का भारी दबाव था। ब्रिक्स का महत्वपूर्ण सदस्य रूस, जो भारत और चीन दोनों का घनिष्ठ मित्र है, ने भी चीन के ऊपर दबाव डाला कि वह भारत के साथ विवाद जल्द से जल्द सुलझाये, इस मामले को न सुलझाने पर ब्रिक्स सम्मेलन ही संकट के दायरे में आ जाता। माना

जा रहा है कि ब्रिक्स सम्मेलन में भारतीय प्रधानमंत्री ने भाग लेने के लिए षर्त रख दी थी कि पहले चीन डोकलाम मुद्दे को सुलझाये।[7] इस कारण ब्रिक्स के सम्मेलन को सफल बनाने के लिए चीन के लिये यह आवश्यक हो गया था कि वह डोकलाम विवाद का शीघ्र समाधान करे।

चीन द्वारा डोकलाम विवाद को आक्रामक रूख अपना तीव्र तनाव उत्पन्न करने के पीछे चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की आन्तरिक कमजोरियों को छिपाकर फिर से अगले कालाविध के लिए राष्ट्रपति की चाहत एक कारण माना जा रहा है। चीन में कम्यूनिस्ट पार्टी का महत्वपूर्ण 19वाँ सम्मेलन का आयोजन होना है जिसमें नयी केन्द्रीय समिति का चयन और सात सदस्यीय पोलित ब्यूरो की स्टैण्डिंग कमेटी के सदस्यों को स्थानापन्न करना है।[8] षी जिनपिंग डोकलाम मामले को लेकर कम्युस्टि पार्टी में अपनी स्थिति मजबूत करना चाहते थे परन्तु भारतीय सेना के अटल इरादों ने षी जिनपिंग के उपरोक्त योजना को ध्वस्त कर दिया। इस मामले को और लंबा खींचने पर चीन के घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय छवि को और नुकसान ही पहुँचना था।

भारत–चीन सम्बन्धों को देखा जाये तो दोनों देशों के बीच व्यापारिक सम्बन्ध रहे हैं और चीन का भारत में बड़ा व्यापारिक निवेश है, भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने स्पष्ट कहा था कि भारत का मार्ग शान्ति है और चीन का भारत में निवेश तीव्र गति से ऊँचाई पर है। यह कथन चीन को अप्रत्यक्ष संकेत था कि व्यापारिक युद्ध में वह पराजित होगा क्योंकि वर्तमान में भारत के साथ उसका 51 बिलियम डॉलर अधिशेष का व्यापार है।[9] भारत से पाँच अरब डॉलर का व्यापार करने वाला चीन इतने बड़े बाजार को भी जोखिम में नहीं डाल सकता था। चीन ने पिछले वर्षों में जितना निवेश किया है उसका 77 प्रतिशत निवेश हाल के वर्षों में हुआ है। यही कारण है कि नाथू ला दर्रे से होकर जाने वाली वार्षिक मानसरोवर यात्रा को तो चीन ने रोक दिया परन्तु व्यापार को नहीं।

भारत चीन सम्बन्ध सदैव उतार–चढ़ाव पूर्ण रहे हैं। डोकलाम विवाद के चरम् तनाव के दौर में भी भारत ने संयम बरता और निरन्तर कूटनीतिक पहल व शान्तिमय समाधान को प्राथमिकता दी। इस क्रम में विवाद शुरू होने के लगभग एक महीने बाद 14 जुलाई, 2017 को जर्मनी के हैम्बर्ग में जी–20 शिखर सम्मेलन में मोदी और जिनपिंग की कई मुद्दों पर बातचीत हुई। 27 जुलाई, 2017 को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल कूटनीतिक प्रयासों के जरिए विवाद को हल करने के मिषन के तहत चीन गए। दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों के बीच भी वार्ता हुई।

डोकलाम विवाद से पूर्व भारत–चीन सम्बन्धों पर दृष्टि डालें तो जम्मू कश्मीर सीमा पर अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश के उत्तर में 90 हजार वर्ग किमी भू–भाग पर अधिकार जमाने के बाद चीन पूर्वोत्तर पर नजरें गड़ाए हुए है। भारत–चीन भूटान के त्रिकोण पर स्थित डोकलाम के पठार पर कब्जे का मललब भारत के सिक्किम को असम, नगालैण्ड सहित पूर्वोततर के तमाम राज्यों से जोड़ने वाले संकरे गलियारे पर चीन की सीधी नजर जिससे उस इलाके में भारत की सामरिक बढ़त का खत्म होना। चीन का भारत से नाराज होना उसकी वन बेल्ट वन रोड

परियोजना में भारत का सम्मिलित न होना भी है। चीन ने एशिया से यूरोप तक सड़क, बन्दरगाह और रेलमार्ग के जरिए परिवहन का नेटवर्क खड़ा करने के उद्देश्य से यह परियोजना प्रारम्भ की जिसमें अगले पाँच वर्षों में वह 800 अरब डॉलर खर्च करने जा रहा है। चीन की इस परियोजना में चीन–पाकिस्तान इकोनामिक कॉरिडोर भी षामिल है, जिसके जरिए चीन, पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर तक पहुँच गया है। भारत–चीन सम्बन्धों में तनाव का एक कारण तिब्बितियों के धर्मगुरु दलाईलामा विवाद भी है। 17 मार्च, 1959 को दलाईलामा का अपने अनुनायियों संग चीनी सेना से बचते हुए भारत आना और हिमाचल में बसना चीन को अस्वीकार्य था। दलाईलामा को भारत में शरण दिए जाने को वह आंतरिक मामलों में भारत का हस्तक्षेप मानता है। इन्हीं तनावों की पृष्ठभूमि में डोकलाम विवाद भी उपजा परन्तु अन्ततः उसका शान्तिमय समाधान हुआ।

डोकलाम से भारत व चीन की सेनाओं की वापसी भारतीय कूटनीति की बड़ी जीत है। वास्तव में चीन की नीति विस्तारवादी है। वह इस पूरे क्षेत्र पर अपना वर्चस्व कायम रखना चाहता है जहाँ भी उसे मौका मिलता है, वह फायदा उठाने की कोशिश करता है। असल में चीन भारत को मनोवैज्ञानिक दबाव में लाना चाहता था और इसलिए उसने इस सन्दर्भ में 1962 के युद्ध की चर्चा की। 1986–87 में भारत, तिब्बत सीमा पर तवांग क्षेत्र की तरफ भी समूदोंगचू में कुछ ऐसी ही घटनाएँ हुई थीं। वहाँ भी अंत में कूटनीति के जरिए विवाद हल हुआ था।[10] डोकलाम विवाद पर दोनों देशों की सहमति चीन की मजबूरी ज्यादा लगती है और भविश्य में दोनों के बीच विवाद उत्पन्न न हो ऐसी संभावना नहीं है क्योंकि भारत–चीन सीमा विवाद दषकों से उलझा है। इसके अलावा वैश्विक मुद्दों खासकर पाकिस्तान के संदर्भ में चीन का रुख हमेषा भारत विरोधी रहा है।[11]

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि फिलहाल डोकलाम विवाद का कूटनीतिक समाधान न केवल भारत व चीन वरन् विश्व के अन्य देशों के लिए भी शान्ति प्रदान करने वाला है परन्तु चीन के रवैये को देखते हुए यह आशंका निरर्थक नहीं है कि वह शीघ्र ही पुनः सीमा विवाद को तूल दे। अतः चीन से सजग रहने की आवश्यकता है। निःसन्देह भारत की संयम व धैर्य की कूटनीतिक रणनीति चीन के आक्रामक एवं भड़काऊ बयानों द्वारा मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने की रणनीति की तुलना में ज्यादा प्रभावी थी। यह भी उल्लेखनीय है कि 1962 के बाद से 55 सालों में दोनों देशों के बीच उत्तराखंड और अरुणाचल प्रदेश में लगी सीमाओं पर तनातनी हुई और सीमा विवाद चलते रहे परन्तु दोनों देशों में सीधी लड़ाई नहीं हुई और न ही कभी गोली चली। इसी परिदृश्य में यह आशा की जा सकती है कि दोनों देश भविष्य में भी विवादों का समाधान कूटनीतिक तरीके से करेंगे क्योंकि युद्ध दोनों देशों के लिए ही नहीं वरन् विश्व के लिए भी अहितकारी होगा। हिन्दी–चीनी भाई–भाई के नारे के साथ–साथ चीन के प्रति सदैव सजग रह भारत अपनी कूटनीतिक सफलता प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ

1. *लाल, राहुल* – डोकलाम पर कूटनीतिक समाधान – *आज,* **31 अगस्त 2017, पृष्ठ 6**
2. *अमर उजाला,* **6 अगस्त 2017, पृष्ठ 1**
3. *सम्पादकीय, दैनिक जागरण,* **13 अगस्त 2017**
4. *सम्पादकीय, दैनिक जागरण, 1***3 अगस्त 2017**
5. **धमकियाँ तो दे रहा चीन, पर राह आसान नहीं** – *अमर उजाला,* **19 अगस्त 2017, पृष्ठ 1**
6. *लाल, राहुल* – **डोकलाम पर कूटनीतिक समाधान** – *आज,* **31 अगस्त 2017 पृष्ठ 6**
7.- *Bhattacharya, Abanti* - **China's Insecure Nationalism, Time of India, 7 August 2017, Page12**
8- *Editorial* - **Stand Firm** - *Times of India,* **5 August 2017, Page 14**
9. *हैदर, सलमान* – **समझदारी का नया दौर,** *अमर उजाला,* **29 अगस्त 2017, पृष्ठ 6**
10. *शशांक* – **पता नहीं समझौता दिल से या मजबूरी में,** *अमर उजाला,* **29 अगस्त 2017, पृष्ठ 14**

`